भगवान के प्रति निष्ठा के बिना कर्म फल नहीं देता: वंदना श्री

देवास, प्रदेश टाईम्स। गीता के उपदेश को सुनकर हम अच्छे कर्म के लिए प्रेरित जरूर होते हैं। किंतु जब तक अपने कर्म अर्थात कार्य करते समय प्रभु का स्मरण नहीं रखोगे तो कर्म के प्रतिफल में अनुकुलता नहीं रहेगी। अर्जुन के साथ स्वयं भगवान थे उसी विश्ववास ने अर्जुन को कर्म करने के लिए प्रेरित किया और अर्जुन ने अन्याय के विरूद्ध शस्त्र उठाए तथा महाभारत जैसे युद्ध में विजय प्राप्त की। कर्म के अनुसार फल मिलता है यह पूर्ण सत्य नहीं, कई बार हम अच्छे कार्य करते हैं फिर भी परिणाम अनुकूल नहीं होता, उसका कारण कर्म करते समय हमने परमात्मा को साक्षी नहीं माना। जो हमें सतकर्म करने के लिए प्रेरित करता है। भगवान के प्रति निष्ठा के बिना कोई कर्म अनुकूल फल नहीं देता। यह विचार कैलादेवी मदिर पर हो रही संगीत एवं दृष्यमय श्रीमद भागवत कथा में बृजरत्ना वंदना श्री ने श्रीमद भागवत के प्रसंगों का दृष्टांत सुनाते हुए व्यक्त किये। कथा में हर प्रसंग को आपने जितनी सुंदरता से वर्णित किया उतने सुंदर अभिनय के साथ बृज के कलकारों ने चरित्र के भाव में प्रवेश कर उपस्थितजनों को हर प्रसंग में इतना बांधे रखा कि वे भाव विभोर हो गए। कथा संपूर्ण रसों के साथ ईश्वर की लीला का दर्शन करा रही है। कथा में सती अनुसुईया के सतित्व का बहुत ही सुंदर सजीव चित्रण किया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, माता पार्वती, ब्रह्माणी के साथ माता अनसुईया एवं नारद जी का सुंदर अभिनय को देखकर श्रोतागण नयनाभिराम हो गए। कथा में ध्रुव चरित्र का मार्मिक चित्रण किया गया साथ ही ध्रुव तारे के अस्तित्व का कथा में सुंदर वर्णन हुआ। अजामिल की कथा में मनुष्य के बुरे कर्मो का परिणाम एवं अंत समय में ईश्वर याद करने का प्रतिफल बताया। आज कथा में ठाकुरजी के अवतरण की कथा दोपहर 3 बजे से प्रारंभ होगी।